मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना में अग्रसर एक अनोखा मिशन

मनुष्य के जीवन में मानवीय मूल्यों की उपस्थिति और अनुपस्थिति ही मनुष्य को दैवीयता और आसुरीयता का आईना बनती है। जब मनुष्य के जीवन में नैतिक मूल्य होता है तो मनुष्य साधारण न होकर महान और दैवी गुणों से युक्त एक श्रेष्ठ पुरूष के रूप में गणना होती है और वही नैतिक मूल्य नादारद हो जाते है तो वह सीधे तौर पर असुर की श्रेणी में ला खड़ा करता है। जगत नियंता परमपिता परमात्मा द्वारा रचित सृष्टि तीनो त्रिलोक और तीन काल चक्रो में विभक्त है। अविनाशी आत्मा और परमात्मा इन काल चक्रों के मुख्य घटक है। चार युगों के काल चक्र अविरल परिवर्तनशील है। इस काल चक्र में आत्मा की श्रेणी संस्कार सतो, रजो तथा तमों की स्थितियों से गुजरता है जिसमें स्वर्ग-नर्क, देवता-असुर, सुख और दुख का खेल निहित है। काल चक्र के अन्तिम चरण अर्थात तमोयुग में जब मानव दानव की श्रेणी में आ खड़ा होता है तब जगत निर्माता परमात्मा को पुन: मनुष्यआत्माओं को उसी श्रेणी में लाने का महान कार्य करना पड़ता है जहाँ प्रकृति और मानव की सतो प्रधान अवस्था होती है।

इसी काल चक्र में कर्म प्रधान मानव के जीवन में जब गुणों के स्थान पर अवगुण, मानवीय मूल्य की जगह आसुरी मूल्यों का स्वभाव पनपता है तब ऐसी क्रान्ति की आवश्यकता महसूस होती है जिस क्रान्ति से पुन: ऐसे युग का शुभारम्भ हो जहाँ से दरिद्रता, आसुरीयता, वैमनस्यता, हीनता और पतिपना समाप्त हो और रामराज्य की स्थापना हो। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का उद्‌भव इसी कड़ी का हिस्सा है। समस्त मानव जगत को उसके श्रेष्ठ संस्कारों और उसके उत्तरदायित्वों को बोध कराना तथा विभिन्न रूपों, सम्प्रदायों, धर्मों, ऊंच-नीच की कुत्सित मंसा में विघटित समाज को एकता के सूत्र में पिरोकर श्रेष्ठाचारी वातावरण का निर्माण कर मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना करना इस संस्था का मुख्य लक्ष्य है। इसी लक्ष्य के ध्येय से सात दशक पूर्व प्रारम्भ हुई यह संस्था आज पूरे विश्व में अपने इस महान इरादे के साथ कार्य कर रही है।

संस्था का संक्षिप्त परिचय : प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय एक आध्यात्मिक गैर सरकारी शैक्षणिक संस्थान है। इस संस्था की स्थापना सन् 1937 में अविभाजित भारत के हैदराबाद सिन्ध में हुई। स्वयं सर्व के कल्याणकारी परमपिता परमात्मा शिव ने हीरों जवाहरात के व्यापारी साठ वर्षीय दादा लेखराज के तन का आधार लेकर इस संस्था की स्थापना की। सर्वशक्तिमान परमात्मा का स्थूल शरीर न होने के कारण उन्होंने इस महान आत्मा के तन में परकाय प्रवेश किया। स्वयं परमात्मा ने कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि तथा पतित संसार को पावन बनाने की योजना का राज उजागर किया। दादा लेखराज का नामकरण ब्रह्मा के नाम से किया जिसका शास्त्रों में आज भी ब्रह्मा का रूप अन्य देवी देवताओं की तरह नहीं बल्कि एक वृद्ध मानव और अनुभवी महान पुरुष के रूप में दर्शाते है। दादा लेखराज इस परिवर्तन को समझ नही सके तब स्वयं परमात्मा शिव ने साक्षात्कार के माध्यम से उन्हें अपने इस महान कार्य का अनुभव कराया जिसमें सृष्टि के अन्त, महाविनाश और नवीन युग के स्थापना का बोध कराया।

भारत माता, वन्देमातरम्, यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता के रहस्यों को उजागर करते हुए माताओं बहनों को उच्च स्थान देकर इस भागीरथ कार्य के लिए इस संस्था का अभियान सौंपा और यही से शुरू हुआ संस्था का ओम मण्डली के नाम से अभियान। माताओं बहनों को उस समय ऊंचा स्थान मिला जब समाज में माताओं-बहनों के अधिकारों की चर्चा तक नहीं होती थी। परमात्मा ने माताओं-बहनों को ज्ञान का कलश रख इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की नींव रखी। भारत पाकिस्तान विभाजन के बाद आध्यात्मिक क्रान्ति का ओम मंडली के रूप में छोटा सा रूप माउण्ट आबू विस्थापित हुआ। यह सब कुछ परमात्म निर्देशन पर होता रहा। परमपिता परमात्मा की प्रजापिता ब्रह्मा के तन में परकाय प्रवेशता ने शिक्षक के रूप को साकार करते हुए आत्मा के आदि-मध्य-अन्त के रहस्य ज्ञान को उजागर किया तथा आत्मा के गुण और धर्म को अपने अन्दर आत्सात् करने की प्रेरणा देते रहे। आत्म ज्ञान का बल और आत्म शक्ति के लिए मन-बुद्धि को स्वयं परमात्मा ने अपने साथ लगाने की विधि सिखाई।

स्वयं परमात्मा के इस महान कार्य से कमजोर, पतित और आत्मायें शीघ्र ही शक्तिशाली बनने लगी और उनके आसुरी स्वभाव बदल दैवी गुणों के समावेश ने एक नये जीवन पद्यति को जन्म दिया। यह परिवर्तन इतना शक्तिशाली साबित हुआ कि जो इन साधकों के सानिध्य में आये सबको विचित्र अनुभव होने लगते थे। आत्मा,परमात्मा, तीनो लोक, सृष्टि चक्र का काल का ज्ञान प्राप्त होने लगता और दैवी कुल की आत्मायें अपने अन्दर दैवी गुणों को अपनाने की तथा श्रेष्ठाचारी बनने का संकल्प लेकर इस आध्यात्मिक क्रान्ति में शामिल हो जाती और इस तरह कारवां बढता गया। माताओं बहनों का विशाल समूह एक ऐसे जीवन का उदाहरण मूर्त बना जो कोई भी सोचने पर मजबूर होता। परमात्मा का यह संदेश था कि संसार की सभी मनुष्यात्माओं को यह पूर्ण रूप से पता होना चाहिए कि सर्व मनुष्याओं का पिता परमात्मा इस धरा पर दिव्य और अलौकिक कार्य चल रहा है। स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की मशाल लेकर यह संस्था दिन दुनी रात चौगुना बढ़ती गयी।

इसी कड़ी में ब्रह्माकुमारी संस्थान के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने संस्कार परिवर्तन की रेस में सम्पूर्ण बनकर 18 जनवरी, 1969 को अपने नश्वर शरीर का त्याग किया और फरिश्ते की स्थिति प्राप्त की ताकि वे सूक्ष्मलोक से परमात्मा के साथ अधिक से अधिक सेवा कर सके। इसके बाद दादी प्रकाशमणि इस संस्था की मुख्य प्रशासिका बनी और संगमयुग में आत्मा और परमात्मा मिलन की अदभुत लीला चलती रही इसके लिए परमात्मा ने दादी ह्दयमोहिनी जी के तन का आधार लिया और आज भी यह अदभुत कार्य चल रहा है। यह महसूस होने लगा कि जब तक सभी वर्गों के लोगों को इस आध्यात्मिक क्रान्ति में शामिल नहीं किया जायेगा तब तक मूल्यनिष्ठ युक्त समाज की स्थापना कठिन है। इसके लिए ब्रह्माकुमारी संस्था की सहयोगी संस्था राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान ट्रस्ट द्वारा 17 प्रभाग बनाये गये। जिसमें शिक्षा, प्रशासक, राजनीतिक, न्यायविद् प्रभाग, समाज सेवा, युवा, महिला, मीडिया, मेडिकल, ग्राम विकास, धार्मिक प्रभाग, व्यापार एवं उद्योग, कला एवं संस्कृति, सुरक्षा, खेल प्रभाग तथा यातायात एवं परिवहन आदि को सम्मिलित किया गया।

संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी की अगुवाई में मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने तथा जीवन जीने की कला पर वृहद स्तर पर कार्य प्रारम्भ हुए जिससे समाज से दरिद्रता, पतितपना, हीनता, हिंसा, विखण्डता, जातिवाद और धर्मवाद समाप्त हो तथा एक सुन्दर दैवी गुणों से युक्त मूल्यनिष्ठ समाज रामराज्य की स्थापना हो। दादी प्रकाशमणी जी के देहावसान के बाद संस्था की बागडोर राजयोगिनी दादी जानकी जी के हाथ में है और वे संस्था के साकार प्रजापिता ब्रह्मा तथा दादीजी प्रकाशमणी जी के संकल्पों को पूर्ण करने के लिए कृत संकल्प है। संस्था के देश-विदेश में इस आध्यात्मिक क्रान्ति की उपलब्धियों को देखते हुए सन् 1985 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस संस्था की मुखिया दिवंगत दादी प्रकाशमणि जी को अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति दूत से सम्मानित किया। इसके अलावा इस संस्था के महान कार्यों के लिए कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

संस्था की उपलब्धियां: ईश्वरीय निर्देशन में नवीन युग की स्थापना के कार्य का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि संस्था के 70 सालों के आयाम में देश-विदेश सहित विश्व के 120 देशों में अपना मानवीय कार्य का पड़ाव डाल चुकी है। जिसमें आठ लाख से अधिक वे लोग सम्मिलित है जो अपने आपको आत्मिक ज्ञान और राजयोग की शिक्षा तथा परमात्म सानिध्य से अपने जीवन को दिव्य बनाया है। इस संस्था से जुड़े लोग के अन्दर व्यसन, मांस मदिरा, चोरी, हिंसा, अपवित्रता, धर्मवाद, जातिवाद का अभाव देखा जा सकता है। दैवी गुणों को अपनाना विश्व वसुधैव कुटम्बकम की स्थापना करना मुख्य ध्येय है।

सेवा क्षेत्र: संस्था द्वारा प्रतिवर्ष देश एवं विदेश में आत्म जागृति तथा ईश्वरीय संदेश देने के लिए हजारों कार्यक्रमों की रूपरेखा बनायी जाती है जिसमें सभी वर्गों सहित बच्चों, युवाओं, महिलाओं के उन्नति के लिए अनेक सम्मेलन, संगोष्ठी, प्रदर्शनी, मेला, कार्यशाला, समूह चर्चा का आयोजन कर लाखों लोगों को अपने मानवीय मूल्य तथा उत्तरदायित्वों का बोध कराया जाता है। जिससे आत्मा के निजी संस्कार उनके जीवन में आये और मूल्यों से युक्त मानव बन सके।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स